मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO
New Delhi on 10/11.10. 2021

Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

वर्ष : 57 अंक 10 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
अक्टूबर 2021 बहाई वर्ष : 177–78

विश्व न्याय मन्दिर

अब तक हमने जिन उपलब्धियों को बताया है–प्रभुधर्म का सीधे संदेश देने की क्षमता में वृद्धि, समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के साथ आध्यात्मिक महत्व के विषयों पर सार्थक बातचीत, पावन लेखों के अध्ययन को व्यवहार में उतारना, आस–पड़ोस और गाँवों के किशोरों को नियमित रूप से आध्यात्मिक शिक्षण देने के संकल्प को दोहराना, ऐसे कार्यक्रम के प्रभाव को बढ़ाना जो किशोरों में दोहरे नैतिक उद्देश्य अपनी निहित क्षमता में वृद्धि और समाज के रूपांतरण में योगदान देने की भावना में वृद्धि करे–यह सभी संस्कृति के स्तर पर एक और विकास को बढ़ावा देगी, जिनका प्रभाव निश्चित रूप से दूरगामी है।

–28 दिसम्बर 2010

मध्य प्रदेश में रूही पुस्तक–2 का राज्य स्तरीय सेमिनार सम्पन्न

मध्य प्रदेश के भोपाल में प्रशिक्षण संस्थान मण्डल द्वारा 20 से 25 सितम्बर–2021 तक छः दिवसीय रूही–पुस्तक–2 'सेवा का संकल्प' के अध्ययन के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के समुदाय समूहों–भोपाल, श्यामपुर, नीमच, इन्दौर, महू, सुसेरा और गोहद से लगभग 25 से 30 मित्रों ने भाग लिया और रूही संस्थान की श्रृंखला की दूसरी पुस्तक का अध्ययन पूर्ण किया।

इन छः दिनों के सेमिनार में उपस्थित मित्रों द्वारा, भोपाल के पड़ोसी समुदाय गोहरगंज के सिमरोदा एवं गैलपुर गांव में और श्यामपुर के झरखेड़ा गांव में सघनता के साथ भ्रमण किया गया। इसके साथ ही, भोपाल समुदाय के इन्द्रपुरी, पडरिया और कोलुआ क्षेत्रों में भी गृह भ्रमण किया गया। गृह भ्रमण का स्वरूप यह रहा कि मित्रों द्वारा अध्ययन के दौरान पुस्तक में जिन महत्वपूर्ण विषयों और बहाई सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता था, उन्हीं को मित्रों द्वारा टीम में बंटकर, चिन्हित परिवारों में जाकर उनके साथ साझा किया जाता था। यह भ्रमण दोपहर के भोजन के बाद किये जाते थे। इसी प्रकार यह सिलसिला 4 दिन तक नियमित रूप से चला, जिसमें शिक्षण और गृह भ्रमण हेतु महत्वपूर्ण अध्ययन सामग्री का भी उपयोग किया गया।

इस पूरे छः दिवसीय कार्यक्रम में नॉर्थ जोनल टीम के सदस्यों का पूर्ण सहयोग और उनके द्वारा अन्य क्षेत्रों से प्राप्त की गई सीख, जो अन्य प्रदेशों से थी उनका भी उपयोग भोपाल और उसके आस–पास के समुदायसमूहों में



भोपाल में आयोजित पुस्तक–2 का अध्ययन करते हुए मित्रगण

किया गया। क्षेत्र भ्रमण के दौरान मित्रों ने यह महसूस किया कि भोपाल समुदाय के इन्द्रपुरी क्षेत्र में किये गये भ्रमण से प्राप्त सीख से यह स्पष्ट हुआ कि वहाँ पर मित्रों के अन्दर ग्रहणशीलता का स्तर बहुत अधिक है और वह प्रभुधर्म के प्रति काफी जिज्ञासु हैं। इन सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर परामर्श कर वहाँ के परिवारों और गतिविधियों में शामिल होने वाले मित्रों को 24 सितम्बर को बहाई भवन भोपाल में शाम 7 बजे आमंत्रित किया गया।

शेष पृष्ठ 4 पर

झारखण्ड में अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी एवं क्लस्टरों के अभिगमन की दिशा में रूही पुस्तकों एवं गृहभ्रमणों का आयोजन

वर्तमान वर्ष अब्दुल बहा को समर्पित होने की दिशा में झारखण्ड के विभिन्न क्लस्टरों एवं समुदाय समूहों में रूही पुस्तक संख्या 1, 2, 4, 8, 9 तथा अब्दुल बहा से सम्बंधित पुस्तकों जैसे कहानियां, उनकी वसीयत और इच्छा पत्र, दिव्य योजना की पाती, कुछ प्रश्न तथा उसके आध्यात्मिक समाधान इत्यादि पुस्तकों का अध्ययन ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से मित्रों के साथ किया जा रहा है। इन सबका मूल उद्देश्य है कि कैसे अधिक से अधिक मित्रों को अब्दुल बहा की पवित्रता से परिचित कराया जाये सामग्रियों का अध्ययन अध्यापन कर मित्रगण इन दोनों उद्देश्यों को साकार करने का प्रयास कर रहे हैं। एक ओर जहाँ पुस्तक संख्या 8 से मित्र बहाउल्लाह की शाशवत संविदा एवं धर्म की प्रगति में आये उतार चढ़ाव से परिचित हो रहे हैं, जिसके प्रति उनका ज्ञान पूर्व में सीमित था अब विस्तृत हो रहा है, वहीं मातायें तथा युवा बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार झारखण्ड के विकास में बाब एवं बहाउल्लाह की द्वि–शताब्दियों का फल है, ठीक उसी प्रकार झारखण्ड



आसनबनी में रूही पुस्तक–8 का अध्ययन करते हुए मित्रगण

एवं उनके स्वर्गारोहण की शताब्दी को मनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाये। एक और उद्देश्य कि क्लस्टरों का अभिगमन भी होता रहे, साथ–ही–साथ इसके लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। जमशेदपुर, आसनबनी, पटमदा, मानगो, सिल्ली, तमाड़, गम्हरिया, ईचागढ़, परसुडीह, राजनगर, बुंडू जैसे अन्य क्लस्टरों में रूही पुस्तकों के अध्ययन अध्यापन की सहायता से एक ओर इन उद्देश्यों की पूर्ति की जा रही है तो दूसरी ओर गृहभ्रमणों, पारिवारिक प्रार्थना सभा, समूहों में अब्दुल बहा की पुस्तकों एवं इस विशेष अवसर पर परिषद द्वारा तैयार की गयी को अब एक स्तर और आगे ले जाने में अब्दुल बहा की शताब्दी भी सहायता करेगी, जो आशीर्वादित और प्रेरणादायक है। देखा जा रहा है कि मित्रगण अपने जीवन में अब्दुल बहा की कहानियों की समझ को व्यक्तिगत जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। वे अपने वार्तालाप में उनके उद्धरणों को अब शामिल करने लग गए हैं। एक अलग उत्साह मित्रों में देखा जा रहा है जिस प्रकार मित्रगण और स्थानीय संस्थायें तथा एजेंसियाँ साथ–साथ मिलकर अब्दुल बहा के शताब्दी समारोह की तैयारी एवं क्लस्टरों

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

पंजाब क्षेत्र की गतिविधियाँ

• क्षेत्रीय बहाई परिषद पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–कश्मीर ने 26 सितम्बर 2021 को हुकूकुल्लाह के महत्वपूर्ण विधान पर एक वर्चुअल बैठक का आयोजन किया। परिषद के सचिव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। एक वरिष्ठ बहाई मित्र ने पूरे सत्र में अपनी सेवायें प्रदान करते हुए हुकूकुल्लाह के विधान के बारे में अनुयायियों को शिक्षित किया। इस बैठक में लगभग 20 प्रतिभागी शामिल हुए। इस बैठक के दौरान निम्नलिखित पहलुओं के बारे में बताया गया।



फरीदाबाद में आयोजित रूही पुस्तक–2 का अध्ययन करने वाले मित्रगण

हुकूकुल्लाह बहाउल्लाह द्वारा किताब–ए–अक़दस में 1873 में स्थापित एक बहाई विधान है। उन्होंने हुकूकुल्लाह के विधान की आध्यात्मिक प्रकृति और भौतिक संसाधनों के प्रति दृष्टिकोण पर इसके प्रभाव को बेहतर ढंग से समझने में सहायता की।

प्रार्थना और उपवास धर्म के दो स्तम्भ हैं और वैसा ही हुकूकुल्लाह का विधान भी है जो ईश्वर का अधिकार है। हुकूकुल्लाह भुगतान को किसी की संपत्ति को शुद्ध करने का एक तरीका माना जाता है। यह प्रारम्भ में 1992 तक केवल मध्यपूर्व के बहाईयों के लिए ही लागू था। यह भी बताया गया कि जब किसी की आय एक निश्चित स्तर तक पहुँच जाती है जैसा किताब–ए–अक़दस में समझाया गया है, तो व्यक्ति को हुकूकुल्लाह को ईश्वर के अधिकार के रूप में भुगतान करने का आदेश दिया जाता है।

ईश्वर का अधिकार एक विधान और आध्यात्मिक दायित्व है, जो किताब–ए–अक़दस में बहाईयों को दिया गया है, जिसे दबाव या धमकी के माध्यम से लागू नहीं किया जा सकता है बल्कि इसे अत्यधिक प्रेम व प्रसन्नतापूर्वक दिया जाना चाहिए। यह एक उपहार है जो प्रत्येक आत्मा के साथ ईश्वर के हर लोक में रहेगा। उन्होंने कोष में योगदान करने के महत्व को समझाया परन्तु हुकूकुल्लाह बहाईयों हेतु एक स्थायी विधान है। उन्होंने कोष में दान के विषय में एक बहुत ही सुंदर कहानी साझा की।

साथ ही, यह भी बताया कि हुकूकुल्लाह पर विश्व न्याय मंदिर का एकमात्र अधिकार है।

• स्थानीय आध्यात्मिक सभा, फरीदाबाद ने रूही पुस्तक–2 पर दो दिवसीय गहन सत्र का आयोजन किया और रूही पुस्तक–1 के सभी वर्गों का संक्षिप्त अध्ययन किया। इस सत्र में लगभग 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सहायक मण्डल सदस्य और क्षेत्र की उप–क्षेत्रीय समिति के चार सदस्य भी उपस्थित रहे। इसके अलावा कार्यक्रम में तत्काल कार्य योजनाओं को शामिल किया गया।

जिस तरह प्रिय मास्टर शिक्षण करते थे उसी तरह का वीडियो एक बहाई द्वारा हिन्दी में तैयार किया गया, जिसकी सभी ने प्रशंसा की।

सात मित्रों का एक दल स्थानीय मानव संसाधन के साथ सिही क्षेत्र में साप्ताहिक किशोर समूह कक्षा आरम्भ करने के लिए युवाओं से मिला।

समूह ने निमंत्रण मिलने पर नेमका गाँव का दौरा किया और एक साप्ताहिक अध्ययन कक्षा शुरू की गई।

अगले दो सप्ताह में 4 से 6 व्यक्तियों के साथ एक स्टडी सर्कल अभियान की भी योजना बनाई गई।

सरकार और सांसदों के साथ संबंधों में दृढ़ता लाने के प्रयास

बहाई इतिहास के प्रत्येक चरण में, सरकार के साथ–साथ समाज के प्रमुख समूहों और व्यक्तियों के साथ कार्य करने पर, धर्म के प्रमुख द्वारा विशेष ध्यान दिया गया है।

हाल ही में, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सार्वजनिक मामलों के कार्यालय को एक संसद सदस्य और पाँच नवनियुक्त मंत्रियों के साथ बहाई धर्म का परिचय देने और बहाईयों की गतिविधियों को साझा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इनमें श्री जी. किशन रेड्डी, केन्द्रीय संस्कृति, पर्यटन और पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास मंत्री; श्री सर्बानंद सोनोवाल, केन्द्रीय आयुष और बंदरगाह, जलरानी और जलमार्ग मंत्री; डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, विदेश एवं शिक्षा राज्यमंत्री; कुमारी प्रतिमा भौमिक, सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री; श्री रामेश्वर तेली, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस एवं श्रम और रोजगार राज्यमंत्री और श्री प्रसन्ना आचार्य, राज्य सभा सदस्य सम्मिलित हैं।



केन्द्रीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल को बहाई उपासना मंदिर का प्रतीक भेंट करते हुए

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा का यह विभाग सरकार और सांसदों के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ एवं गहन करने हेतु व्यवस्थित प्रयास कर रहा है।

देवलाली में परिवार समूहों के संचालकों के उन्मुखीकरण हेतु कार्यक्रम

महाराष्ट्र में, देवलाली स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा 23 सितम्बर, 2021 को परिवारों के समूहों के संचालकों के उन्मुखीकरण के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलमय प्रार्थनाओं से हुई। स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा सभी संचालकों का स्वागत किया गया।



देवलाली में आयोजित उन्मुखीकरण कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

उन्मुखीकरण में संचालकों के साथ विश्व न्याय मंदिर के 26 नवम्बर 2018 के प्रपत्र का अध्ययन किया गया और संचालकों द्वारा प्रार्थना सभाओं को कैसे नियमित करते हैं, इस पर विचार–विमर्श हुआ। देवलाली में 161 परिवारों के समूह हैं जिसमें 1500 से अधिक परिवार शामिल हैं।

कार्यक्रम के अंत में स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी की योजना को साझा गया। कार्यक्रम में 64 संचालको ने भाग लिया, जो 5 मुहल्लों से आये थे।

सिक्किम में सर्वधर्म प्रार्थना सभा और संभाषण

गंगटोक के बहाइयों की स्थानीय आध्यात्मिक सभा ने 29 अगस्त 2021 को ऑनलाइन माध्यम से सर्वधर्म प्रार्थना सभा और संवाद का आयोजन किया। व्यापक रूप से फैले कोरोना वायरस के विनाशकारी प्रभावों के विरूद्ध एकजुटता दिखाने हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की शुरूआत गंगटोक के बहाइयों की स्थानीय आध्यात्मिक सभा की उपाध्यक्ष की संक्षिप्त टिप्पणियों से हुई। इसके बाद इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, हिंदू और बहाई धर्म के पवित्र ग्रंथों का पाठ और मंत्रोच्चार किया गया।

प्रार्थना सभा के बाद "इस महामारी के दौरान हमारे समाज को सेवाएं देने में धर्म कैसे एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है" पर एक संवाद हुआ। इस विषय पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा करने वाले सम्मानित धार्मिक प्रमुख और प्रतिनिधि थे–जनाब मोहम्मद रिज़वान अली, इमाम, अंजुमन–ए–इस्लामिया, जामा मस्जिद, गंगटोक; संत पॉल चर्च, 5वें माइल, फादर एडवर्ट बरेटो, तादौंग; श्री शरप तमांग, सहायक प्रोफेसर, सिक्किम इंस्टीट्यूट ऑफ हायर निंगमा स्टडीज, पैंगथांग, गंगटोक; श्री सुरजा हांग सुब्बा जिलाध्यक्ष, श्री सत्य सांई सेवा संगठन, दारमदीन; हरकामया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, समदूर, गंगटोक के एसोसिएट प्रोफेसर और सिक्किम की सहायक मण्डल सदस्य।

धार्मिक प्रमुखों और प्रतिनिधियों ने सभी का ध्यान इस ओर केन्द्रित किया कि हम एक मानव परिवार का हिस्सा हैं और हम जो कुछ भी करते हैं उसका अतःप्रवाह प्रेम होना चाहिए। हालांकि कोविड–19 महामारी ने नस्लवाद, चिंता, घरेलू हिंसा और सांप्रदायिक दंगों जैसे मुद्दों को हवा दी है, लेकिन सकारात्मक पक्ष पर ऐसे लोगों के समूह थे और हैं, जो महामारी के दौरान लचीले रहे हैं और विभिन्न क्षमताओं में समाज की सेवा की है। करुणा, निःस्वार्थता, एकजुटता जैसे शब्द आज हमारे समुदाय में बातचीत का हिस्सा बन गए हैं और हम जानते हैं कि केवल इन विशेषताओं के साथ ही हम महामारी के विनाशकारी परिणामों को संबोधित कर सकते हैं कि यह स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, आर्थिक समस्या आदि के संबंध में हो।

इस महामारी ने हमें अनुभव कराया है कि हमें "मानवजाति की नई जाति" के रूप में उभरना चाहिए, जहाँ किसी से यह नहीं पूछा जाना चाहिए कि हम किस धर्म, जाति, रंग या पंथ से संबंधित हैं या हम किस भाषा में बात करते हैं या हम किस राष्ट्रीयता के हैं ?

यह एक उत्तम समय है जहां हमें इन सभी तुच्छ मतभेदों से ऊपर उठकर निःस्वार्थ भाव से मानवता की सहायता करने और सभी धर्मों के सच्चे उद्देश्य यानी प्रेम, एकता और सेवा को पूर्ण करने हेतु आगे आने की आवश्यकता है।



गंगटोक में आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा

राष्ट्रीय कार्यालय में सेवा का अवसर

राष्ट्रीय बहाई केन्द्र में सांख्यिकी विभाग में सेवा करने का अवसर है। आवेदक को कंप्यूटर परिचालन के ज्ञान के साथ स्नातक होना चाहिए। एक्सेल और वर्ड प्रोग्राम की अच्छी जानकारी के साथ–साथ डेटा प्रोसेसिंग और विश्लेषण का भी अच्छा अनुभव होना चाहिए। आवेदक को अंग्रेजी और हिंदी दोनों का ज्ञान अनिवार्य है। इस सेवा के लिए जब भी आवश्यकता होती है, तब भारत के विभिन्न राज्यों में बार–बार यात्रा करनी होती है।

सांख्यिकी विभाग की प्राथमिक जिम्मेदारियों में चयनित उन्नत क्लस्टरों में सांख्यिकीय रिपोर्ट कार्यक्रम स्थापित करने में मदद करना और सांख्यिकीय डेटा एकत्र करने और उपयोग करने के लिए क्षेत्रीय और क्लस्टर स्तरों पर क्षमता निर्माण करना शामिल है। सभी उन्नत क्लस्टरों में सांख्यिकीय जानकारी के संग्रह, रखरखाव, प्रवाह और उपयोग के लिए प्रणाली को स्थापित करने और मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। प्रत्येक चक्र के अंत में, सांख्यिकीय रिपोर्ट कार्यक्रम से क्षेत्रीय फाइलें सभी बहाई परिषदों से एकत्र की जाती हैं और उनमें उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के लिए विभिन्न प्रकार की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार की जाती हैं। सांख्यिकीय रिपोर्ट कार्यक्रम के संचालन में चल रहा एक महत्वपूर्ण कार्य प्रशिक्षण प्रदान करना है।

यह विभाग बहाई विश्व केन्द्र के सांख्यिकी विभाग के साथ मिलकर काम करता है। राष्ट्रीय बहाई केन्द्र में सेवा करना एक असाधारण विशेषाधिकार और उच्च आध्यात्मिक अनुभव है, यदि किसी अनुयायी को यह अवसर मिलता है तो वह इसे गंवाना नहीं चाहेगा। यह व्यक्ति के लिए विभिन्न स्तरों पर क्षमता निर्माण करने और बहुत कुछ सीख प्राप्त करने का एक बड़ा अवसर है। इच्छुक मित्र कृपया nsaindia@ibnc.in पर सम्पर्क करें।

नव प्रकाशित पुस्तकें

प्रिय मित्रों, हमें आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि बहु–प्रतीक्षित पुस्तक **"मिस्ट्री ऑफ गॉड"** का हिन्दी संस्करण **"ईश्वर का रहस्य"** अब बहाई लिटरेचर पब्लिशिंग ट्रस्ट पर आप सभी मित्रों के लिए उपलब्ध है। इस पुस्तक में अब्दुल बहा के ऐसे विशिष्ट चित्रों का समोवश किया गया है जो आपने पहले कभी नहीं देखे होंगे। इस पुस्तक का मूल्य डाक खर्च सहित 550/–रुपये है।



आप हमारी वेबसाइट bahaipublishingtrust.in से इस पुस्तक को ऑनलाइन खरीद सकते हैं। पुस्तकों का ऑर्डर फोन पर 91–11–40523382–84, या ईमेल bptindia@ibnc.in पर भी दे सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

बहाई लिटरेचर एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट

एफ–3/6, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस–1

नई दिल्ली–110020

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2021-22-23

अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी के अवसर पर कहानी जो अब्दुल बहा ने कही

बाब ने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया

"ये पावन अवतार मानवता के संसार को उन अपूर्णताओं से मुक्त करते हैं जो उसे व्याकुल किये रहती हैं और मनुष्य को स्वर्गिक सौंदर्य की पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ बनाते हैं।"

–अब्दुल बहा

बुशिहर के व्यापारी दबीह को मानते थे। इसका मतलब यह कि किसी भी व्यापार में मोल–भाव करने के बाद और शर्तों पर राजी होने के बाद भुगतान के समय, कीमत कम करने के लिए कह सकते थे। इस प्रकार विक्रेता से वे कुछ राशि वापस प्राप्त कर सकते थे।

एक दिन कुछ व्यापारी बाब के पास गये और काफी बड़ी मात्रा में नील खरीदने की बात तय की। इस समझौते के बाद वे नील अपने भंडार में ले गये। जब भुगतान का समय आया तब उन्होंने तय भाव में कमी करने को कहा।

बाब ने उनका यह आग्रह स्वीकार नहीं किया। उन्होंने उनसे कहा कि वे बिक्री के तय भाव और अन्य शर्तों पर पहले ही राजी हो चुके थे और सौदा पूरा हो चुका था, इसलिए उन्होंने कीमत कम करने से मना कर दिया। खरीददार ने कितना भी जोर दिया लेकिन वे अडिग रहे।

उन्होंने कहा, "दबीह इस प्रदेश की रीति है।" बाब ने कहा, "शीघ्र ही इस प्रकार की बुरी रीतियाँ बदल दी जायेंगी।"

वे कितना भी पीछे पड़े बाब ने अपनी बात नहीं बदली। उन्होंने उनसे कहा यदि उन्हें कीमत अधिक लग रही हो तो सामान वापस भी कर सकते हैं।

उन्होंने कहा, "लोगों के बीच दबीह प्रचलित है।"

बाब ने कहा "मैं इस रिवाज को बंद करना चाहता हूँ।"

खरीददार ने कहा "सामान खरीदा जा चुका है और हमारे भंडार में भी पहुँच गया है। उसे वापस करना निश्चय ही हमारी साख पर असर डालेगा।"

बाब ने उत्तर दिया, "यह आपके ऊपर है कि लेन–देन को पूरा करें लेकिन बिना दबीह के।"

फिर से उन्होंने दबीह के परम्परागत रिवाज की बात की और फिर से बाब ने उत्तर दिया कि वह इस रिवाज को बदल देंगे।

अंततः सामान उनके पास वापस आ गया, क्योंकि उन्होंने दबीह के उनके आग्रह को नहीं माना था।

उन्होंने उस समय लोगों में प्रचलित अनेक पुराने रिवाजों को बदल दिया।

इसके थोड़े ही दिन बाद बाब के एक चाचा बुशिहर पधारे। उन व्यापारियों ने उनसे जाकर शिकायत की, "उन्होंने हमारी साख खराब कर दी। हमने कुछ लेन–देन किया और उसकी कीमत कम करने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया। तब उनका सामान वापस करना पड़ा। किसी भी व्यापारी के लिए यह बड़ा अपमान है। आप उन्हें अवश्य समझायें कि वह लोगों की इच्छा का सम्मान करें और उनके रिवाजों को नीचा नहीं दिखायें।"

चाचा ने परम पावन बाब से कहा, "लोगों के प्रति और प्रदेश के रीति–रिवाजों के प्रति सम्मान दिखाओ।"

बाब ने उत्तर दिया, "इसके बाद यदि दबीह के साथ वे कोई लेन–देन करना चाहते हैं तो मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा।"

अब्दुल–बहा बुशिहर शहर में ठहरने और उस शहर में बाब के काम के विषय में बातें कर रहे थे।

झारखण्ड में अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी एवं क्लस्टरों के अभिगमन की दिशा में रूही पुस्तकों एवं गृहभ्रमणों का आयोजन

पृष्ठ 1 का शेष

के अभिगमन में प्रयास कर रही हैं, विशेष आशीर्वाद के पात्र हैं। राज्य में वर्तमान तक लगभग 25 मित्र रूही पुस्तक–8 का अध्ययन पूरा कर चुके हैं तथा 66 मित्र पूरा करने की दिशा में अग्रसर हैं। भक्तिपरक बैठकों के प्रतिदिन आयोजनों से एक संस्कृति का विकास करने का प्रयास किया जा रहा है, जहाँ सामूहिक उपासना की संस्कृति विकसित की जा सके, जिसका उल्लेख पवित्र लेखनी में किया गया है। वर्तमान महामारी ने गहरा प्रभाव डाला है, जिस कारण बड़े स्तरों पर आयोजन प्रभावित हुए हैं। इस कारण अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी का समारोह प्रत्येक परिवार में कैसे मनाया जाये इस दिशा में प्रयास किया जा रहे हैं।



पटमदा में रूही पुस्तक–1 का अध्ययन करते हुए मित्रगण

मध्य प्रदेश में रूही पुस्तक–2 का राज्य स्तरीय सेमिनार सम्पन्न

पृष्ठ 1 का शेष

इस कार्यक्रम की सफलता हेतु एक स्पष्ट योजना तैयार की गई और कुछ मित्रों को उसमें अपने विचारों और सीख को उन मित्रों के साथ बांटने हेतु चिन्हित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मित्रों की संख्या 100 से भी अधिक हो गई और बहाई भवन पूरी तरह आगंतुकों से भर गया। मित्रों के चेहरे पर उत्साह और खुशी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी। इस कार्यक्रम में प्रभुधर्म के बारे में जानकारी ही नहीं बल्कि उन्हें कई महत्वपूर्ण बहाई सिद्धांतों और नियमों से परिचय करवाया गया। साथ ही, प्रभुधर्म की सभी प्रकार की बहाई मित्रों द्वारा चलाई जाने वाली गतिविधियों की जानकारी और उससे सम्बधित सीख को मित्रों के साथ बांटा गया। कार्यक्रम में उठने वाले उत्साह और आनंद को देखते हुये, वहां उपस्थित सभी मित्रों और युवाओं व माता–पिताओं ने अपने क्षेत्र में कार्यक्रम की शुरूआत करने, चल रही गतिविधियों में भाग लेने का वादा किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी मित्रों को रात्रिभोज पर आमंत्रित किया गया, जिसमें कार्यक्रम में उपस्थित मित्रों द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2021-22-23
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO New Delhi on 10/11.10.2021
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg, New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)